रक्तदान – महादान

प्रस्तावना "दान" वास्तव में कितना छोटा शब्द है यह सिर्फ दो वर्णों से मिलकर बना हुआ है। दान चार प्रकार के बताए गए हैं "रक्तदान" औषधदान के अंतर्गत आता है। हमारे देश में कई दानी पुरूष हुए, सभी ने दान किये, किसी ने आहारदान किया तो किसी ने औषधदान किया। भारत में कई वर्षों से दान करने की परम्परा चली आ रही है, लेकिन वास्तव में "रक्तदान" "जीवनदान" है। हम सभी इस दान के महत्त्व को बहुत अच्छी तरह से समझ सकते हैं। यह दान किसी घर के बुझते हुए चिराग को पुनः जला सकता है, अर्थात किसी भी व्यक्ति को नया जीवन दे सकता है। कहा गया है :

बूंद बूंद के मिलन से जल में गति आ जाये।
सरिता बन सागर मिले सागर बूंद समाये।।

अर्थात् जिस प्रकार जल की एक बूंद से नदी व नदी के मिलने से सागर का निर्माण होता है। ठीक उसी प्रकार, हमारे शरीर में उपस्थित रक्त की एक एक बूंद मिलकर किसी को "जीवनदान" दे सकती है।

रक्त क्या है ? सामान्य भाषा में हम कहते हैं यह लाल रंग का एक तरल पदार्थ है। वास्तव में यह प्लाज्मा तथा हीमोग्लोबीन और अन्य कई पदार्थों से मिलकर बना है। पहचानने के लिए इसे चार रक्त समूहों में विभाजित किया गया है -

1. रक्त समूह ए
2. रक्त समूह बी
3. रक्त समूह एबी
4. रक्त समूह ओ

उपरोक्त रक्त समूहों में एबी रक्त समूह सर्वग्राही तथा ओ सर्वदाता माना गया है। सभी व्यक्तियों का अपना रक्तसमूह होता है। हमारे रक्त में उपस्थित फाइब्रोजीन नाम सीरम रक्त का थक्का जमाने में सहायक होता है। ऑक्सीजन हमारे रक्त में उपस्थित हीमोग्लेबिन को शरीर के अन्य भागों में भेजने का कार्य करती है। प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में औसतन 5 लीटर रक्त उपस्थित रहता है। एक बार रक्तदान करने के लगभग कुछ घन्टों में ही इसकी पूर्ति होना आरंभ हो जाती है। उपरोक्त रक्त समूहों में से ए, बी, तथा ओ की जानकारी डॉ. कार्ल स्टेनर ने दी थी। इसके पश्चात उनके ही विद्यार्थियों ने इसमें उपस्थित एंटीज व एंटीबॉडी के आधार पर एबी रक्त समूह की खोज की। तो ये रक्त की संक्षिप्त जानकारी थी।

राष्ट्रीय व सामाजिक उत्थान में इसके प्रति सकारात्मक सोच

हमें अपने राष्ट्र की प्रगति के लिए कुछ कर गुजरने का मौका मिले तो उसे गंवाना नहीं चाहिए। चूंकि समाजों से मिलकर ही राष्ट्र का निर्माण होता है। तो पहले हम समाज की सेवा के बारे में सोचें। वास्तविकाता में ''सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है''। चाहे वह आर्थिक रूप से हो या शारीरिक रूप से, जी हां रक्तदान एक सेवा है वह भी शारीरिक रूप से की गई सेवा। यदि हम किसी को आर्थिक रूप से मदद नहीं कर सकते, तो कोई बात नहीं, लेकिन आपके पास रक्त तो है, तो आप उसे दान कीजिए और पहले समाज का और फिर राष्ट्र का उत्थान कीजिए।

रक्तदान का महत्त्व, भ्रांतियाँ एवं निवारण

हम किसी भी चीज के महत्तव को इतनी आसानी से नहीं समझ सकते, ये तो मनुष्य की प्रेंति है। जब तक स्वयं वह किसी घटना या हादसे से न गुजरे। हम ये कहना चाहते हैं यदि हमारे परिवार में किसी को रक्त की जरूरत है और कई ब्लड बैंकों से पता करने के बाद हमें वह रक्त समूह नहीं मिल पा रहा हो या ऐसा व्यक्ति नहीं मिल पा रहा, तब हमें रक्त की एक बूंद का महत्तव समझ में आता है। इसलिए यह जरूरी नहीं कि - **हम पहले गिरें, फिर संभलें।**

बिना गिरे संभल जायें, तो यह बहुत अच्छी बात है। कुछ लोगों का मानना है कि रक्त-दान करने से कमजोरी आती है, चक्कर आने लगते हैं, तो ये सब गलत है। वास्तव में रक्त का दान करने से सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमारे शरीर में जिस स्थान पर रक्त बनता है वहां पर इसके बनने के बाद क्रियाशीलता बढ़ जाती है। हम आपको ऐसे व्यक्ति भी बता सकते हैं, जिन्होनें केवल 40 या 50 की उम्र में 50 या 52 बार रक्तदान किया। वो अच्छे व स्वस्थ्य रहते हैं। आप भी कई लोगों से परिचित होंगे। जिनके मन में यह गलतफहमी है कि रक्तदान करने से शरीर को किसी भी प्रकार का नुकसान या हानि होती है, तो इस बात को भूल जाएं और अवश्य की रक्तदान करें। प्रति व्यक्ति 5 लीटर रक्त उपलब्ध है और कुछ मिलीलीटर दान करने से यदि किसी के जीवन को बचा सकते हैं, तो अपने मनुष्य जन्म को सार्थक समझें। कहा गया है-

सोचो, जरा सोचो, करो मन में विचार।
मनुज जनम मिले न बार बार।।

उपरोक्त पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए आप रक्तदान जरूर करें और सभी को प्रोत्साहित करें। कुछ अनजान व्यक्तियों को इसके बारे में जानकारी दें तथा सभी फैली हुई भ्रांतियों को दूर करें। क्योंकि 84 लाख योनियों में भटकने के बाद मनुष्य जन्म की प्राप्ति होती है।

उपसंहार

अभी तक हमने समझा रक्त क्या है राष्ट्रीय व सामाजिक उत्थान में इसके प्रति सकारात्मक सोच, रक्तदान का महत्त्व कुछ भ्रांतियां। जहां तक हम सभी यही चाहेंगें कि जन-जन में इसके प्रति जागरूकता बढे, तथा सभी यह प्रण करें कि हम अपने जीवन में कम से कम छः या सात बार रक्तदान अवश्य करें। इससे ज्यादा बार भी कर सकते हैं। रक्त के द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को जीवनदान किया जा सकता है। हमारे हिन्दू-धर्म में सेवा और दान इनका बहुत महत्त्व है। यदि आपके एक बार रक्त दान करने से किसी व्यक्ति को नया जीवन मिलता है तो इसमें बुराई क्या है। एक बार रक्तदान करने सेस मन को जो खुशी मिलती है उसका अनुभव आप रक्तदान करके ही कर सकते हैं। कहा गया है-

लहु का रंग एक है – अमीर क्या गरीब क्या।

इसलिए आप कभी ये न सोचना कि यह व्यक्ति गरीब है, इसे रक्तदान करने से क्या लाभ। वास्तव में ईश्वर ने इसे सभी को एक समान बनाया है, न कोई गरीब है और न ही कोई अमीर। हां, एक जरूरी बात, आप अपना रक्त देते समय या किसी का रक्त लेते समय परीक्षण जरूर करवायें कि उसमें कोई संक्रमित रोगाणु तो नहीं।

रक्तदान - महादान है।